फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 251 1/- मई 2009

पहली मई को लखानी चप्पल फैक्ट्री, प्लॉट 122 सैक्टर-24 में आग से बड़ी सँख्या में मजदूर जल गये।

विचारणीय है शिशुओं का टीकाकरण

● मनुष्य प्रकृति का एक अंश है। प्रकृति हमारे शरीरों को अपनी देखभाल करने, स्वयं को स्वस्थ रखने की शक्ति देती है।

प्रकृति में बहुत-सारे कीटाणु हैं। हम में से प्रत्येक के मुँह में ही इतने कीटाणु होते हैं जितने पृथ्वी पर मुनष्य नहीं हैं। कीटाणुओं के हमारे शरीर के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं, गतिशील रिश्ते हैं। मनुष्य के शरीर के साथ मिल कर कीटाणु शरीर की प्रक्रिया का संचालन करते हैं।

हमारे शरीर के अन्दर के तथा शरीर के बाहर के कौन-कौन से कीटाणु, किन-किन मात्राओं में और कैसी स्थितियों में हमारे लिये हानिकारक हैं यह कोई सीधी-सरल बात नहीं है।

● ऊँच-नीच, अमीर-गरीब और विशेषकर मण्डी-मुद्रा से जुड़े ज्ञान-विज्ञान अपनी नाक तक देखने के दौर में भी "अन्य" को शत्रु के तौर पर देखते थे। ज्ञानियों-विज्ञानियों की भाषा ही युद्ध की भाषा होती थी-है। यह लोग हमारे शरीर के सिपाही-कर्नल-जनरल को "आक्रमणकारियों" से लड़ते देखते थे-हैं।

आरम्भ में टीकाकरण कीटाणुओं को मात्र शत्रु मान कर चलता था। फिर इसमें मिले मुनाफे के पुट ने स्थितियाँ बहुत-ही विनाशकारी बना दी हैं।

सरकारें टैक्सों की वसूली के जरिये बिखरी हुई धन-सम्पदा को एकत्र करती हैं। इस तरह बनते लूट के ढेर के लिये, इस पर कब्जे के लिये गिरोहों के बीच युद्ध होते रहे हैं। इधर टैक्सों के इन अरबों-खरबों-नील-पदम में हिस्सा-पत्ती के लिये नेता और दल चुनावों में करोड़ों खर्च भी करने लगे हैं। टीकाकरण का सरकारी कार्यक्रम नेताओं, अफसरों, विशेषज्ञों, कम्पनियों के लिये दुधारू गाय भी है – भारत सरकार पोलियो अभियान पर ही हर वर्ष 1200 करोड़ रुपये खर्च कर रही है।

और, यह युद्ध की भाषा ही है कि सरकारें आज वास्तव में कीटाणुओं को हथियारों में बदलने पर अरबों खर्च कर रही हैं। प्रयोगशालाओं में कीटाणुओं में परिवर्तन कर उन्हें एटम बमों जैसा बनाना आज हजारों वैज्ञानिकों की नौकरी है।

● टीकाकरण के लिये बहुत भारी दबाव है, जबरन ही कह सकते हैं। प्रश्न हम सब के सम्मुख मुँह बाये खड़ा है :

जन्म लेते ही बच्चे के टीके लगाना शिशु का स्वागत करना है या फिर अत्याचार का आरम्भ? नियमित अन्तराल पर शिशुओं के अनेक प्रकार के टीके लगाने, बून्द पिलाने पर विचार करने के लिये कुछ तथ्यों पर गौर करें।

– शिशुओं को लगाये जाते अधिकतर टीके बिना परीक्षण के लागू कर दिये गये हैं। ऐसे में पहला कार्य तो यह बनता है कि टीकाकरण की उपयोगिता को जाँचा जाये। जाँच के दो पहलू होते हैं : क्या यह उपयोगी है? इसके प्रयोग से कोई अन्य नुकसान तो नहीं हैं? हालैण्ड में, और हाल ही में जर्मनी में किये प्रयोगों में पाया गया है कि टीके नहीं लगे बच्चों से टीके लगे बच्चे अधिक बीमारियों से ग्रस्त होते हैं।

– बन्दरों और भेड़ों में टीके तैयार करने वाली क्रूरता अपने आम में एक अति महत्वपूर्ण सवाल है परन्तु उस पर चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। शिशुओं को लगाये जाते टीकों में पारा और अल्युमिनियम को ही यहाँ देखें। विषैलेपन में पारा एटम बम में प्रयोग होते यूरेनियम से ही कम है। शरीर में पारा पहुँचने पर यह मस्तिष्क की अनेक बीमारियों का कारण बन सकता है। अल्युमिनियम गुर्दों और जिगर के लिये बहुत हानिकारक है। शिशुओं को जो टीके लगाये जा रहे हैं उन में पारा और अल्युमिनियम की घातक मात्रायें होती हैं। यह तो शरीर की प्रतिरोध की क्षमता है कि बड़ी सँख्या में बच्चे बीमार नहीं हो रहे।

– भारत सरकार के अपने आँकड़ों के अनुसार भी एक चौथाई से ज्यादा शिशु कुपोषण के शिकार हैं। ऐसे बच्चों का टीकाकरण भद्दा-क्रूर मजाक है .....बच्चों को 25 बार पोलियो की बून्द पिलाने के बाद भी वे पोलियो से ग्रस्त हुये हैं।

– करोड़ों बच्चों को टीके लगाने के अरबों-खरबों के धन्धे के अभिशाप के अहसास के लिये कृषि में दवाओं के धन्धे को देखें। कीटनाशक और खरपतवार नष्ट करते रसायन दवा कम्पनियों के लिये भारी मुनाफे लिये हैं। परन्तु, प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ती और खेतों, फसलों, भूजल को विषैला बनाती यह दवायें गाँवों में भी कैन्सर की महामारी ला रही हैं।

शिशुओं को टीके लगाने से होती अत्याधिक हानियों के बारे में अधिक जानकारी के लिये कृपया श्री जगन्नाथ चटर्जी का आलेख: "50 Reasons to Protect Infants from Vaccines" देखें। एक मित्र ने यह हमें भेजा। सम्पर्क के लिये ई-मेल <jagchat01@yahoo.com>

शिशु के लिये माँ का दूध पर्याप्त है। छह महीने तक तो सिर्फ, और सिर्फ माँ द्वारा दूध पिलाना एक अनिवार्यता बनता है। अमर होने और चिरयौवन की अपनी हवस से कृपया बच्चों को बख्शें।

एन टी पी सी

राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम मजदूर : "एन टी पी सी के दादरी, उत्तर प्रदेश प्लान्ट में कार्य करने के लिये हमें 30 जनवरी से 28 अप्रैल तक के गेट पास दिये। बड़े ठेकेदार **लार्सन एण्ड टूब्रो** ने छोटे ठेकेदार **ए आई एम कन्सट्रक्शन** के जरिये हमें रखा। हम ने 56 मीटर की ऊँचाई पर बॉयलर में केबल ट्रे और फिर कन्ड्युट पाइप भी लगाई। सुपरवाइजर ने तीन बार खर्चा दिया और तनखा के लिये कहते रहे कि आ रहे हैं। लेकिन 25 मार्च तक तनखा नहीं दी तो हम ने काम छोड़ दिया। एन टी पी सी अधिकारियों से भी हम ने शिकायतें की हैं पर किये काम के पैसे हमें आज 30 अप्रैल तक नहीं मिले हैं।"

अनुरोध

फरीदाबाद में 10-12 जगह और ओखला (दिल्ली) तथा उद्योग विहार (गुड़गाँव) में 'मजदूर समाचार' बाँटने में हमें हर महीने 15 दिन लगते हैं। बाँटने में सहायता की जरूरत है। अपनी सुविधा अनुसार आप एक अथवा अधिक स्थानों पर 'मजदूर समाचार' बँटवाने में सहयोग कर सकते हैं। स्थान तथा दिन के बारे में हम से सम्पर्क करें।

'मजदूर समाचार' के कोई संवाददाता नहीं हैं। समय हो तो अखबार लेते समय अपनी बातें बतायें। पहले से लिख कर रखी सामग्री दें या फिर पत्र डालें।

हमारा प्रयास 'मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद – 121001

कानून हैं शोषण के लिये, छूट है कानून से परे शोषण की

ग्लोब टैक्स मजदूर : "प्लॉट 2, 13/3 मथुरा रोड़ (फ्रिक इण्डिया के पीछे) स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई होती है। कम्पनी रात की शिफ्ट दिखाती ही नहीं और दिन में 8 घण्टे ड्युटी दिखाती है। तीसों दिन काम होता है पर दस्तावेजों में साप्ताहिक छुट्टी दिखाते हैं। फैक्ट्री में 65 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 8 के ही हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 2500-3200 रुपये देते हैं परन्तु जिन 8 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उनकी पक्के रजिस्टर में ऑपरेटर ग्रेड की तनखा दिखाते हैं। कच्चे-पक्के रजिस्टर बना रखे हैं। तनखा देरी से, 20 तारीख के बाद। गाली बहुत ज्यादा, मारपीट भी और तनखा काट लेते हैं। भाप का, गर्मी का काम है और जगह की बहुत कमी है। लैट्रीन बहुत गन्दी। नौकरी छोड़ने पर 15-20 दिन किये काम के पैसे देते ही नहीं। यहाँ ग्लोब टैक्स में **मारकोस, रमण इन्डस्ट्रीज, सेवन सीरीज, प्रीति फैशन, लॉज फैशन, माया टैक्स, राइट चैनल** आदि के कपड़ों की रंगाई होती है पर कुछ माल के बिल एस.आर. फैब्रिक के नाम से बनाये जाते हैं। खतरनाक रसायन प्रयोग किये जाते हैं पर सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं – चश्मे भी नहीं, दस्ताने भी नहीं। कास्टिक आँख में गिर जाता है, हाथ खराब रहते हैं, चर्म रोग। डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल क्षेत्र में 40 डाइंग मिल हैं और प्रदूषण तथा जल स्तर गिराने को ले कर सैक्टर 30 व 31 के निवासी कल्याण संगठनों ने इन फैक्ट्रियों को यहाँ से हटाने के लिये चण्डीगढ में मुकदमे किये हुये हैं। केस चलते रहें और फैक्ट्रियाँ नहीं हटें के लिये क्षेत्र की प्रत्येक डाइंग मिल मैनेजमेन्ट कलर फैब के मैनेजिंग डायरेक्टर के पास हर महीने 12 हजार रुपये जमा करती हैं। रंगाई कारखानों में पानी बहुत चाहिये। डाइंग मिलें दिखाने के लिये सप्लाई का पानी लेती हैं और बड़ी टंकी लगा रखी हैं परन्तु यह अधिकतर पानी जमीन से खींचती हैं। बोरिंग गैर-कानूनी है पर फैक्ट्रियों में यह सामान्य है और सरकारी अधिकारी भी जानते हैं। पूरे क्षेत्र में पानी का स्तर बहुत नीचे चला गया है। डाइंग मिलों का संगठन मन्थली की देखरेख करता है। इसके अलावा नगर निगम, श्रम विभाग और मुख्यतः पुलिस अधिकारी जब किसी फैक्ट्री में पहुँचते हैं तब 5-6 हजार रुपये ले जाते हैं।"

कौशिको मशीन टूल्स श्रमिक : "प्लॉट 250 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500-2800 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जाँच वालों के आने की सूचना कम्पनी को दो घण्टे पहले मिली और 16 अप्रैल को दोपहर पौने तीन बजे ठेकेदारों के जरिये रखे 100 मजदूर फैक्ट्री से बाहर कर दिये। जाँच वालों के सम्मुख 25 स्थाई मजदूर ही कार्यरत रहे। आज 17 अप्रैल को ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकर ड्युटी के लिये पहुँचे तो कम्पनी ने गेट से ही वापस कर दिया क्योंकि आज भी जाँच वालों के आने की बात है। फैक्ट्री में पावर प्रेस बनती हैं और ठेकेदार गाली देते हैं। मार्च की तनखा आज 17 अप्रैल तक नहीं दी है। महीने में 50-60 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

कास्टमास्टर कामगार : "प्लॉट 46 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। प्रतिदिन 3-4 गाड़ी माल **टाटा मोटर्स** को रुद्रपुर तथा जमशेदपुर भेजा जाता है और **एरिकसन** को लखनऊ माल जाता है। ठेकेदारों के जरिये रखे 200 से ऊपर मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2500-2600 व ऑपरेटरों की 3000-4500 रुपये और हर महीने देरी से, 20 तारीख के बाद। मंगलवार, 14 अप्रैल को जाँच वाले फैक्ट्री आये। कम्पनी को पहले ही पता था इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों को काम पर आने से मना कर दिया था। जाँच वालों के सम्मुख 40 स्थाई मजदूर तथा सुपरवाइजर ही मशीनें चला रहे थे और ढेरों मशीनें बन्द थी – मैनेजमेन्ट ने कहा काम कम है। फैक्ट्री में पीने का पानी खारा है और भोजन के लिये स्थान नहीं है, मशीनों की बगल में बैठ कर रोटी खाते हैं।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 84 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और रात 3½ पर छोड़ते हैं – महिला मजदूर रात 8 तक ही। यहाँ **गैप, वाल मार्ट, जे सी पैनी** के लिये टी-शर्ट बनती हैं। चार ठेकेदारों के जरिये धागे काटने के लिये रखी महिला मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, पीस रेट और 11 घण्टे कार्य के करीब 100 रुपये बनते हैं। पुरुष मजदूरों को ओवर टाइम सिंगल रेट से। तीन मंजिला फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर होंगे और मार्च की तनखा आज 14 अप्रैल तक नहीं दी है।"

हाईटेक ऑटो मजदूर : "4 नेहरु ग्राउण्ड स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **हीरो होण्डा, नोर ब्रेम्से, रेलवे** के लिये पुर्जे बनते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2500-2800 रुपये। चालीस मजदूरों में 16 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और 8 मजदूर तो 15-16 वर्ष के लड़के हैं। पीने का पानी ठीक नहीं, लैट्रीन बहुत गन्दी।"

पेस एग्जिम श्रमिक : " 158 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 2200-2400 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 70 में 25 के हैं और इन 25 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर हस्ताक्षर करवाते हैं। शिफ्ट सुबह 9 से रात 11 की है, ओवर टाइम सिंगल रेट से। फैक्ट्री में अल्युमिनियम की ढलाई होती है – 14 घण्टे ड्युटी के दौरान दो बार चाय और एक बार नाश्ता देते हैं।"

एस्कोर्ट्स कामगार : " एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक फैक्ट्री में चिनाई कार्य के लिये ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे के 100 रुपये देते हैं।"

टाटा रायरसन वरकर : "33 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में, ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

सरकारी कर्मचारी : "फरीदाबाद में **पी डब्लू डी, बी एण्ड आर** के 250 स्थाई कर्मचारियों को आई सी आई सी आई बैंक के जरिये तनखा मिलती है – मार्च की आज 17 अप्रैल तक नहीं।"

बाकमैन मजदूर : "प्लॉट 10 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 150 हैल्परों की तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। आजकल ओवर टाइम कम, महीने में 40 घण्टे, पैसे सिंगल रेट से।"

नूकेम केमिकल डिवीजन श्रमिक : "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में फरवरी की तनखा 12 अप्रैल को जा कर दी है।"

शिवम् देवांश कामगार : "प्लॉट 110 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे कार्य पर 26 दिन के 3000 और 4000 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10-15 मजदूरों के ही हैं। यहाँ **लीरा, के आर आर, ज्योति एपरेल्स** आदि के कपड़ों की रंगाई होती है। गाली देते हैं, पीने का पानी खारा, लैट्रीन गन्दी।"

बोनी पोलीमर वरकर : " प्लॉट 37-पी सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में फिर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हो गई हैं, हफ्ते में सातों दिन काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम, 13 रुपये प्रतिघण्टा।" **लुमैक्स मजदूर :** "प्लॉट 78 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के 36 लोगों को मार्च की तनखा आज 22 अप्रैल तक नहीं दी है।"

डेन्सो श्रमिक : "45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10 वर्ष तक से कार्यरत 20 मजदूरों और 25 स्टाफवालों को एकत्र कर कम्पनी ने कहा है कि यहाँ जगह किराये पर है, मई से कार्य पुणे ले जा रहे हैं इसलिये यहाँ सब का हिसाब करेंगे।" **डी एम कामगार :** " सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 2000 मजदूरों की सुबह 8½ से रात 9 की शिफ्ट है, रात 11-12 बजे तक रोक लेते हैं। प्रतिदिन 12½ घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये फिक्स हैं। रात 9 के बाद 2-3 घण्टे रोकते हैं उसके कोई पैसे नहीं। यहाँ **होण्डा** और **हीरो होण्डा** का पावर प्रेस का काम होता है। ई.एस. आई. कार्ड नहीं देते और पी.एफ. भगवान भरोसे है।" **सुपर ऑटो वरकर :** "प्लॉट 80 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, पैकिंग विभाग में रात की शिफ्ट नहीं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। यहाँ **यामाहा, होण्डा, हीरो होण्डा** के पुर्जे बनते हैं।"

सुपर एज मजदूर : " प्लॉट 109 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हस्ताक्षर 9 तारीख को करवा लिये पर मार्च की तनखा आज 18 अप्रैल तक नहीं दी है।"

गुड़गाँव में मजदूर

रोलैक्स मजदूर : "प्लॉट 24 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 2 की ड्युटी, साप्ताहिक छुट्टी नहीं। महीने में जबरन 200-300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 180 घण्टे के ही पैसे देते हैं – बाकी के देते ही नहीं। दो मिनट की देरी पर गाली दे कर भगा देते हैं – अगले दिन आना। महीने में 3 छुट्टी पर निकाल देते हैं। जनरल मैनेजर समेत सब अफसर गाली देते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 150 मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं - ठेकेदार के जरिये रखे दो हजार मजदूरों की ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा हर महीने देरी से – मार्च की तनखा कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को 15 अप्रैल को दी और ठेकेदार के जरिये रखों को 22 अप्रैल को।"

ऋचा एण्ड कम्पनी श्रमिक : "239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ड्युटी सुबह 9 से रात 10 रोज और रात 2, सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। जबरन रोकते हैं, गर्मी में भारी दिक्कत। लगातार 21 घण्टे कार्य कर सुबह 6 बजे छूटे की फिर सुबह 9 से ड्युटी – छुट्टी करने पर नौकरी से बाहर। तबीयत खराब होने पर भी गेट पास नहीं, काम करते रहो। और, चाय अथवा भोजन के लिये काम बन्द होते ही पँखे बन्द ! भोजन अवकाश में लेटने नहीं देते – सीढियों पर बैठो क्योंकि चद्दरों की छत के कारण ऊपर कैन्टीन बहुत गर्म रहती है। पीने का पानी गर्म। यहाँ हम तीन हजार मजदूर **गैप** आदि के लिये वस्त्र बनाते हैं। महीने में 150 से अधिक घण्टे ओवर टाइम – 52 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। गाली बहुत देते हैं।"

धीर इन्टरनेशनल कामगार : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में महीने में 170-180 घण्टे ओवर टाइम। बहुत हेराफेरी कर 100 घण्टे तक खा जाते हैं, 1200-1500 रुपये तक की गड़बड़..... कम्पनी की घड़ी 11¼ दिखाती है तो कम्प्युटर 11..... एक-दो मिनट के लिये एक घण्टा उड़ा देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तबीयत खराब होने पर भी जबरन काम करवाते हैं। गाली देते हैं, धक्के मारते हैं, पीट भी देते हैं। सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। करीब 5000 लोग काम करते हैं, बायर का पता नहीं। पीने का पानी ठीक नहीं, लैट्रीन बहुत गन्दी। भोजन के लिये 18 रुपये देते हैं।"

विवा ग्लोबल वरकर : "413 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में मजदूरों के पीने का पानी बहुत-ही गर्म है। छुट्टी माँगने पर इस्तीफा लिखने को कहते हैं। भर्ती के समय महिला मजदूरों का परीक्षण वे लोग करते हैं जिन्हें सिलाई का कोई अनुभव नहीं है। साहबों की हर बात में गाली होती है। महँगाई भत्ता नहीं देते और शिकायत पर जाँच के लिये आने वाले पैसे ले कर चले जाते हैं। पे-स्लिप नहीं देते इसलिये तनखा और ओवर टाइम का पता नहीं चलता। वार्षिक बोनस नहीं देते। तनखा से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। ऐसी कम्पनी पर ताले लगने चाहियें।"

फुड गैलरी मजदूर: "418 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कम्पनियों के लिये भोजन-नाश्ता तैयार करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं। रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 2000-3500 रुपये। तनखा हर महीने देरी से, मार्च की 22 अप्रैल को दी। हाँ, दो समय भोजन देते हैं।"

मोडलामा श्रमिक : "200 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट और 20-40 घण्टे खा जाते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी. एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते। गाली देते हैं, मारपीट भी। निकालने पर 10-15 दिन किये काम के पैसे देते ही नहीं। मार्च की तनखा 22 अप्रैल को दी।"

भारत एक्सपोर्ट कामगार : "493 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में ड्युटी सुबह 9 से रात 1 की और सुबह 4 बजे तक रोक लेते हैं – रविवार को सुबह 9 से रात 9 तक ही। महीने में 300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। छुट्टी माँगने पर गाली देते हैं। एक दिन छुट्टी करने पर कारण नहीं पूछते, कार्ड रोक देते हैं, इस्तीफा दो और 376 फेज-2 स्थित कम्पनी की मुख्य फैक्ट्री से हिसाब लो..... मुझे 20 मार्च को निकाला और 28 अप्रैल को जा कर हिसाब दिया, उसमें भी 300 रुपये कम। यहाँ **परुना** के लिये महिलाओं के वस्त्र बनते हैं। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये और कारीगर पीस रेट पर।"

टोरस होम फर्निशिंग वरकर : "418 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400 और कारीगरों की 3000-3200 रुपये। तीन सौ मजदूर हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। काम कम होने पर तुरन्त 8-10 दिन का ब्रेक। यहाँ **पीयर वन, विन, एल एल** का माल बनता है। ढाई महीने हुये, जाँच वालों के आने से पहले हम मजदूरों की छुट्टी कर दी और फैक्ट्री बन्द दिखाई।"

लक्ष्मी इम्ब्राइड्री मजदूर : "बी-35 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे कार्य पर 26 दिन के हैल्परों को 2200 और कारीगरों को 4000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। गाली देते हैं। मार्च की तनखा 20 अप्रैल को दी।"

स्पार्क श्रमिक : "166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मार्च की तनखा आज 30 अप्रैल तक नहीं दी है। एक मिनट देरी से पहुँचने पर वापस भेज देते हैं। महीने में 125-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और फरवरी में किये के पैसे 28 अप्रैल को दिये। तनखा व ओवर टाइम में से हर महीने पाँच-छह सौ रुपये खा जाते हैं और इनचार्ज से कहो तो गाली, मारपीट भी। छोड़ने पर 20-25 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। मैनेजर बहुत गाली देता है। पुरुष और महिला मजदूर हैं पर मात्र एक लैट्रीन है, बहुत गन्दी, पानी नहीं, दरवाजे में किल्ली नहीं। मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं – दो-चार की हो सकती हैं।"

कम्पारी एक्सपोर्ट कामगार : "517 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में काम करते 25 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 9 से रात 1 बजे तक रोज ड्युटी। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और चार महीने बाद – जनवरी में किये ओवर टाइम के पैसे आज 30 अप्रैल को देने की बात। कारीगर पीस रेट पर और हैल्परों की तनखा 2800 रुपये। पानी खराब। लैट्रीन बहुत गन्दी। मैनेजर गाली देता है। यहाँ **लिटिल वुड, मैक्स, मुन्नु** का माल बनता है।"

ओरचिड वरकर : "189 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में तीन-चार हजार मजदूरों से महीने में 250-300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 20-50 घण्टे खा भी जाते हैं। हाँ, भोजन के लिये 15 रुपये और रात 8 बजे चाय देते हैं। कैजुअल हैल्परों की तनखा 2800 रुपये। धागे काटने के लिये ठेकेदार के जरिये रखी 70 महिला मजदूरों की तनखा 3000-3200 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यहाँ **चार्ली, पॉल स्लिप** आदि का माल बनता है। इतने मजदूरों के लिये मात्र 5 लैट्रीन, बहुत गन्दी।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर: "208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में जबरन ओवर टाइम करवाते हैं, महीने में 150-175 घण्टे। प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से।"

पोलीपैक श्रमिक : "194 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में तनखा से पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर निकालने पर फण्ड नहीं मिलता। वार्षिक बोनस नहीं देते।"

01.01.2009 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3840 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); अर्धकुशल अ 3970 रुपये (8 घण्टे के 153 रुपये); अर्धकुशल ब 4100 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4230 रुपये (8 घण्टे के 163 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4360 रुपये (8 घण्टे के 168 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4490 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते :

1. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ़
2. श्रीमान मुख्य मन्त्री, हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ़

दिल्ली में मजदूर

1.02.2009 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 3934 रुपये (8 घण्टे के 151 रु.); अर्ध-कुशल श्रमिक 4100 रुपये (8 घण्टे के 158रु); कुशल श्रमिक 4358 रुपये (8 घण्टे के 168रु)। 25-50 पैसे के पोस्टकार्ड से शिकायत के लिये पता : श्रम आयुक्त, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली-110054

लिलिपुट किड्स वीयर मजदूर : "डी-3 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 600 सिलाई कारीगरों ने रेट बढवाने के लिये 11 अप्रैल को काम बन्द किया। एक मास्टर द्वारा 25 रुपये प्रतिघण्टा लिखा गत्ता फाड़ने पर दो मास्टरों की पिटाई हुई। फैक्ट्री चलती है पर 12 को, रविवार को टेलरों ने छुट्टी की। सोमवार को पुलिस ने सिलाई कारीगर गेट पर रोक दिये – काम करना है तो अन्दर जाओ अन्यथा बाहर रहो। कोई अन्दर नहीं गया तो पुलिस लाठियों से भगाने लगी। पार्षद के हस्तक्षेप पर पुलिस गेट से हट गई और सिलाई कारीगर अन्दर गये। रेट 18 से 19 रुपये किया पर कारीगर राजी नहीं हुये। जब 14 अप्रैल को भी काम बन्द रखा तो हिसाब की बातें हुई....ज्यादा बोलने वाले 10-12 ने एक-एक कर हिसाब लिया और बाहर निकले तो कम्पनी ने पट्टों के जरिये उन पर भड़ास निकाली। फैक्ट्री के नोएडा जाने पर 20 रुपये प्रतिघण्टा कर देंगे, यहाँ 19 में काम करो कहने पर काम आरम्भ। सिलाई कारीगरों द्वारा काम बन्द के दौरान फिनिशिंग, वाशिंग, कटिंग विभागों के मजदूर काम करते रहे थे। कम्पनी ने 18 अप्रैल से मशीनें नोएडा ले जानी शुरू कर दी हैं।"

विक्रम ओवरसीज श्रमिक : "ई-44/2-3 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11½ की ड्युटी, रविवार को भी काम, ओवर टाइम सिंगल रेट से। बारह महीने तक ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, फिर छह महीने काटते हैं और नौकरी से निकाल देते हैं। यह 1500 पुरुष मजदूरों के साथ – 100 महिला मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं होती।"

इस से उस फैक्ट्री जाता कामगार : "तुगलकाबाद में एक ठेकेदार के पास 15 कन्साई स्मोकिंग मशीनें हैं जिन्हें फैक्ट्रियों में ले जा कर कपड़ों में इलास्टिक सिलाई का कार्य किया जाता है। मुझे 8 घण्टे के 80 रुपये में हैल्पर रखा। इन चार महीनों में मैं नोएडा, पीरागढी, फरीदाबाद (शाही एक्सपोर्ट) और एक्स-1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ। रोज 12 से 16 घण्टे काम, ओवर टाइम सिंगल रेट से। कहीं भी ई.एस.आई. व पी. एफ. नहीं। तनखा देरी से, कभी 15 तो कभी 25 तारीख को।"

भारतीय खाद्य निगम वरकर : "सी-135 ओखला फेज-1 स्थित एफ सी आई गोदाम में 138 और पूरे भारत में तीस हजार मजदूर जनवरी 94 से पहले से काम कर रहे हैं, लगातार काम कर रहे हैं, अभी भी दैनिक वेतन पर हैं – स्थाई नहीं करते। चावल, गेहूँ की 50 किलो की बोरी कमर पर लाद कर चढना घुटनों और कमर का दर्द तो लिये ही है, दुर्घटनायें भी होती हैं। निगम ने दैनिक वेतन कर्मियों का न तो बीमा करवाया है और न ही बीमार होने पर उपचार करवाती। नेशनल ट्रिब्युनल, मुम्बई में मुकदमा चल रहा है। नेताओं से 'अभी फैसला होगा' सुनते-सुनते हम थक गये हैं। स्थाई मजदूरों से एक चौथाई तनखा हमें मिलती है। मैं 1979 में ठेकेदार के जरिये रखा गया था और 1.1.94 से दैनिक वेतन पर हूँ..... छठे वेतन आयोग का हमारे लिये कोई अर्थ नहीं है।"

यूनिस्टाइल मजदूर : "बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मोती-सितारे लगाती, धागे काटती महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट से। सिलाई कारीगर पीस रेट पर, नई स्टाइल लगने पर कारीगरों द्वारा 3-4 दिन काम बन्द किये बिना रेट तय नहीं हो पाता। मार्च में पहली बार जाँच वाले आये तो चार ठेकेदारों के जरिये रखे 275 मजदूरों को पीछे के गेट से बाहर निकाल दिया। मार्च में ही दूसरी बार छापे में मुख्य द्वार पर ताला लगवा दिया और पीछे से निकालने का समय नहीं दिया। जाँच वाले 2 घण्टे फैक्ट्री में रहे और कई मजदूरों से हस्ताक्षर करवाये। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 25 मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। छापे के बाद ठेकेदारों ने कुछ फार्म भरवाये हैं। यहाँ **लुसिया, टोनिसी, डीना, कालबेटा, एबिटेल** का माल बनता है।"

बसन्त इण्डिया श्रमिक : "जी-4, बी-1 एक्सटेंशन मोहन को-ऑप इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री मे 200 मजदूर और 50 स्टाफवाले **फोनेक्स, टी टी एल** आदि का इलेक्ट्रोनिक्स का जॉब वर्क करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। काम का बोझ बहुत ज्यादा, मैनेजर गाली देता है, डायरेक्टर पीट भी देता है। मार्च की तनखा आज 21 अप्रैल तक नहीं दी है।"

पैरामाउण्ट प्रोडक्ट कामगार : "ए-55 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9½ बजे आरम्भ होती है और महिला मजदूरों को रात 8½ छोड़ देते हैं जबकि पुरुष रात 11½, 1½ सुबह 4-5 बजे छूटते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। धागे काटने वाले मजदूरों की तनखा 1800-2300 रुपये। यहाँ **आर आई, पीची** का माल बनता है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 30-40 स्थाई मजदूरों के ही।"

ब्रिटेन में मजदूर

31 मार्च को फोर्ड/विस्टीओन कम्पनी ने ब्रिटेन में अपनी तीन फैक्ट्रियाँ बन्द करने और सब मजदूरों की नौकरी समाप्त करने की घोषणा की। अगले रोज बेलफास्ट, बजिल्डोन तथा लन्दन स्थित फैक्ट्रियों पर मजदूरों ने कब्जा कर लिया।

सन् 2000 में वाहन निर्माता फोर्ड कम्पनी ने पुर्जों के लिये विस्टीओन नाम से नई कम्पनी खड़ी की। आज विस्टीओन की विश्व-भर में फैक्ट्रियाँ हैं – भारत में भिवाड़ी और चेन्नै में। ब्रिटेन में फोर्ड कम्पनी और यूनियन के बीच समझौता हुआ था जिसमें फोर्ड मजदूरों को नई कम्पनी में तनखा तथा पेन्शन पुराने ढर्रे पर जारी रखने का वायदा किया गया था। नये भर्ती मजदूरों के लिये शर्तें बदतर थी। वह समझौता अब धोखाधड़ी साबित हुआ है.....

लन्दन फैक्ट्री में 250 मजदूर डैशबोर्ड जैसे वाहनों के प्लास्टिक मोल्डेड पुर्जे बनाते थे और मार्च-जुलाई 08 के दौरान ओवर टाइम भी था। मन्दी की मार – अक्टूबर 08 में एक झटके में 30 अस्थाई मजदूर नौकरी से निकाल दिये। और, 31 मार्च को सब स्थाई मजदूरों को एकत्र कर मैनेजमेन्ट ने नौकरियाँ समाप्त, पाँच मिनट में फैक्ट्री से निकलने को कहा – अपने निजी सामान अगले दिन आ कर ले जायें। पहली अप्रैल को मजदूरों ने फैक्ट्री बन्द पाई। पता चला कि विस्टीओन की बेलफास्ट स्थित फैक्ट्री पर मजदूरों ने कब्जा कर लिया है तो पिछले द्वार से 100 मजदूर लन्दन फैक्ट्री में घुस गये और पेन्ट शॉप तथा छत पर कब्जा कर लिया।

लन्दन फैक्ट्री के अधिकतर मजदूर 20-30 वर्ष से कार्यरत थे और इस दौरान उन्होंने अपनी सँख्या दो हजार से 250 में सिकुड़ते देखी थी। लन्दन से कार्य तुर्की, दक्षिण अफ्रीका आदि में भेजा गया था। लन्दन फैक्ट्री में आधे मजदूर भारत, श्री लंका, इटली, वैस्ट इंडीज से थे। कई मजदूर महिला। दसियों वर्ष से वे एकसाथ कार्य कर रहे थे और अब उन्हें अकेले-अकेले रोजगार केन्द्र से निपटना होगा, कर्ज पर लिये घर की किस्त नहीं चुका पाने का डर रहेगा, घटती नौकरियों के माहौल में नई नौकरी ढूँढनी पड़ेगी। फैक्ट्री पर कब्जे का निर्णय कर उन्हें अल्प काल में बहुत कुछ सीखना था : कानून कैसे कार्य करता है ? यूनियन कैसे कार्य करती है ? कब्जे का समर्थन करने वाले यह लोग कौन हैं ? फोर्ड कम्पनी विश्व स्तर पर उत्पादन को कैसे जोड़ती है ? संसार के दूसरे कोने में स्थित मजदूरों से सम्पर्क कैसे करें? कब्जे के लिये समर्थन और भोजन आदि का जुगाड़ कैसे करें ? अपने को और अपने संघर्ष को संगठित कैसे करें ?

यह प्रश्न आज विश्व-भर में मजदूरों के सम्मुख हैं। अप्रैल में ही फ्रान्स में 3 एम फैक्ट्री में मजदूरों ने छँटनी के खिलाफ मैनेजरों को दो दिन दफ्तर में बन्द रखा। इसी समय जर्मनी में फाल्क्स वैगन में नौकरी से निकाले गये 300 मजदूरों ने भूख हड़ताल की। और, इसी दौरान तीन महीने से वेतन नहीं दिये जाने पर यूक्रेन में मजदूरों ने एक हार्वेस्टर कम्बाइन फैक्ट्री तथा सरकारी इमारत पर कब्जे किये..... – फैक्ट्री कब्जे में सक्रिय एक सहभागी

(स्थान की कमी के कारण विस्तार से नहीं दे पाने के लिये क्षमा करें। ब्रिटेन में विस्टीओन फैक्ट्रियों में मजदूरों की तनखायें एक लाख बीस हजार रुपये महीना के आसपास थी।)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73-2011**